न्यूज़ टाइम्स पोस्ट

वर्ष : 03 अंक : 24 | हिन्दी पाक्षिक | 16 - 31 मई, 2019 | मूल्य : ₹ 40 | www.newstimespost.com

मिशन-2019

अब नतीजों का इंतजार

विश्लेषण पूर्वोत्तर : कांग्रेस-बीजेपी के लिए करो या मरो

बिहार चुप वोटरों के मन की बात जानने में जुटी सियासत

नजरिया चौराहे पर खड़े ग्रामीण युवाओं के सवाल

साक्षात्कार कम्पटीशन के साथ 'सुदृढ़' व्यवस्था भी जरूरी

UPHIN/2016/71925

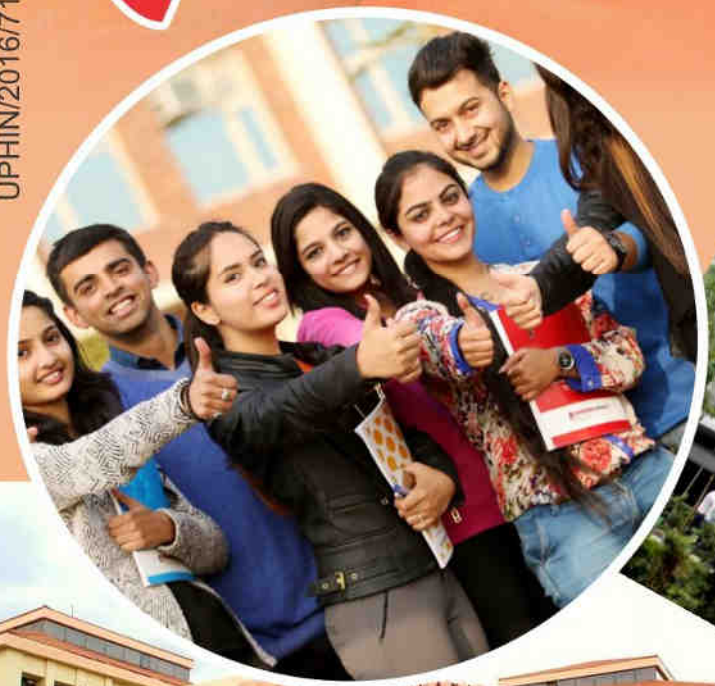

विशेष

प्रतियोगी परीक्षा निखारे प्रतिभा

प्रतियोगी परीक्षा : निखारे प्रतिभा

प्रतिभाओं को तराशना जरूरी

डॉ. भरत राज सिंह
महानिदेशक-तकनीकी,
स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ
मो. 9935025825

प्रतिभा गांव, शहर, जाति, धर्म में विभेद नहीं करती। प्रतिभाएं सम्पूर्ण समाज समाज में बिखरी पड़ी हैं। जरूरत है उन प्रतिभाओं को खोज कर तराशने की। प्रतिभा बहुआयामी होती है। यह किसी विशिष्ट योग्यता अंतर्दृष्टि, तार्किक शक्ति, स्मृति क्रियाकलाप, खेलकूद, शैक्षणिक, संगीत कला आदि से संबंधित हो सकती है। उचित मार्गदर्शन व प्रशिक्षण से सभी प्रकार की प्रतिभाओं का सर्वांगीण विकास संभव है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गुरु अथवा अध्यापक श्रद्धा का पात्र न होकर वेतन भोगी सेवक बन गया है। अध्यापक की भूमिका से अधिक महत्वपूर्ण विद्यालय/विश्वविद्यालय के प्रबन्ध तन्त्र की भूमिका हो गई है। प्रायः लोग इसे मैकाले की शिक्षा प्रणाली के नाम से पुकारते हैं, जो लगन व श्रद्धा से विहीन हो गई है । लार्ड मैकाले ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के ऊपरी सदन (हाउस आफ लार्ड्स) का सदस्य था। 1857 की क्रान्ति के बाद जब 1860 में भारत के शासन को ईस्ट इण्डिया कम्पनी से छीनकर महारानी विक्टोरिया के अधीन किया गया, तब मैकाले को भारत में अंग्रेजों के शासन को मजबूत बनाने के लिए आवश्यक नीतियां सुझाने का महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया था।

उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यहां झाड़ू देने वाला, चमड़ा उतारने वाला, करघा चलाने वाला, कृषक, व्यापारी (वैश्य), मंत्र पढ़ने वाला आदि सभी वर्ण के लोग अपने-अपने कर्म को बड़ी श्रद्धा से हंसते-गाते कर रहे थे। सारा समाज संबंधों की डोर से बंधा था। शूद्र भी समाज में किसी का भाई, चाचा या दादा था तथा ब्राह्मण भी ऐसे ही रिश्तों से बंधा था। बेटी, दामाद, मामा आदि रिश्ते पूरे गांव के हुआ करते थे। भारतीय समाज भिन्नता के बीच भी एकता के सूत्र में बंधा था। धार्मिक सम्प्रदायों के बीच भी सौहार्दपूर्ण संबंध था। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि 1857 की क्रान्ति में हिन्दू-मुसलमान दोनों ने मिलकर अंग्रेजों का विरोध किया था। मैकाले को लगा कि जब तक हिन्दू-मुसलमानों के बीच वैमनस्यता नहीं होगी तथा वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत संचालित समाज की एकता नहीं टूटेगी तब तक भारत पर अंग्रेजों का शासन मजबूत नहीं होगा।

मैकाले ने शिक्षा प्रणाली का ऐसा ढांचा तैयार किया जिसमें भारतीय संस्कृत, फारसी तथा लोक भाषाओं के वर्चस्व को तोड़कर अंग्रेजी का वर्चस्व कायम करने पर जोर था। इसके अलावा पश्चिमी सभ्यता एवं जीवन पद्धति के प्रति आकर्षण पैदा करना भी मैकाले का लक्ष्य था। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में ईसाई

मिशनरियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ईसाई मिशनरियों ने ही सर्वप्रथम मैकाले की शिक्षा-नीति को लागू किया। आज स्वतंत्रता के 72 वर्ष बाद मैकाले की शिक्षा नीति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पूर्णतया सफल हो चुकी है। वंशानुगत कर्म के प्रति सभी वर्ण हीन भावना एवं घृणा के शिकार हो चुके हैं। पश्चिमी सभ्यता एवं जीवन पद्धति के प्रति आकर्षण चरम पर है। शिक्षा में मानव को योग्य व चरित्रवान बनाने का वास्तविक लक्ष्य छूट गया तथा डिग्री-सर्टिफिकेट का महत्व बढ़ गया। पेशेगत योग्यता की शिक्षा महंगी हो गई। इसने एक उद्योग (व्यापार) का रूप ले लिया। सेवा भाव का लोप हुआ तथा व्यापारिक मनोवृत्ति हावी हो गई। आज शिक्षा मात्र अर्थोपार्जन का साधन बन गई है। इससे आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग बन्द हो गया। आहार-विहार में सन्तुलन न होने से शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य में कमी आई तथा आलस्य-प्रमाद के कारण श्रम शक्ति का ह्रास हुआ। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा से सामाजिक दायित्व एवं राष्ट्रीय कर्तव्य का ज्ञान न मिलने से विद्यार्थी स्वयं एवं परिवार केन्द्रित होकर अधिकाधिक अर्थोपार्जन में लगे हैं। वे भौतिक सुख-साधनों के संग्रह-उपभोग को ही जीवन का लक्ष्य समझ बैठे हैं। कहना न होगा कि वर्तमान शिक्षा विद्यार्थी को शरीर, मन एवं बुद्धि से रुग्ण बनाकर कुसंस्कृत तथा पतनोन्मुख बना रही है।

वर्तमान शिक्षा की विफलता

विगत दो दशकों से वर्तमान शिक्षा की विफलता को स्वीकार कर इसमें आमूल परिवर्तन की बात अनेक

विद्वानों व विचारकों ने उठाई है। चूंकि अब तक कोई विचारणीय, अनुकरणीय तथा स्वीकार्य विकल्प प्रस्तुत न हो सका, इसलिए वर्तमान शिक्षा को अपनाना लोगों की मजबूरी है।

विकल्प के रूप में दो प्रश्न उठते हैं -

क) *वर्तमान सन्दर्भों में एक सम्यक भारतीय शिक्षा का स्वरूप क्या हो?*

ख) *वर्तमान शिक्षा में भारतीय परिवेश के अनुसार क्या परिवर्तन हो?*

आज जरूरत वर्तमान शिक्षा को स्वदेशी, सार्थक और मूल्य आधारित बनाने की है। इसके लिए भारतीय पद्धति से आधुनिक विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए। साथ ही गुरु-शिष्य के बीच भावनात्मक आत्मीय संबंधों के निर्माण पर जोर देने की जरूरत है। गुरु के महत्व को बढ़ाकर प्रबन्ध तन्त्र के वर्चस्व को घटाना भी जरूरी है। उच्च-शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने के लिए आर्थिक दबाव को तो कम करना ही होगा, साथ ही चरित्र निर्माण के लिए विशेष पाठ्यक्रम एवं प्रयास की आवश्यकता है। शिक्षा के दो प्रमुख आयाम हैं - विधि और विषय।

प्रतिभा का आकलन

प्रतिभा गांव, शहर, जाति, धर्म में विभेद नहीं करती। प्रतिभाएं सम्पूर्ण समाज समाज में बिखरी पड़ी हैं। जरूरत है उनको खोज कर तराशने की। प्रतिभा बहुआयामी होती है। यह किसी विशिष्ट योग्यता अंतर्दृष्टि, तार्किक शक्ति, स्मृति क्रियाकलाप, खेलकूद, शैक्षणिक, संगीत कला आदि से संबंधित हो सकती है। उचित मार्गदर्शन व प्रशिक्षण से सभी प्रकार की प्रतिभाओं का सर्वांगीण विकास संभव है। राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना वर्ष 1963 से प्रारम्भ हुई थी। उसका मुख्य उद्देश्य प्रतिभावान छात्रों को चिह्नित करना एवं उन्हें छात्रवृत्ति प्रदान करने तक ही सीमित था। एनसीईआरटी द्वारा राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा कक्षा 10वीं के छात्रों के लिए आयोजित की जाती है, जो आज भी नाम-मात्र के लिए चल रही है।

परीक्षा में सफलता के टिप्स

संभव है प्रतियोगी परीक्षा में अधिकतर बच्चों को सफलता न मिले तो भी उन्हें निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि असफलता में भी सफलता का मूल मंत्र छिपा है। प्रतियोगी प्रतिभा परीक्षा में आने वाले बहुविकल्पीय प्रश्नों के बारे में जानकारी देने के साथ उसको हल करने के लिए प्रशिक्षकों द्वारा निरंतर आवश्यक टिप्स दिए जाने चहिए। प्रशिक्षण में भाग लेने वाले सफल छात्र/ छात्राओं से भी उनके अनुभव को प्रशिक्षण के दौरान ग्रहण करना चाहिए। इससे अन्य छात्र/ छात्राओं के लिए प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी और भी आसान हो जाएगी और वे अच्छे अंक प्राप्त कर सकेंगे।

कोचिंग सेंटरों का दुष्प्रभाव

आज कोचिंग कक्षाओं का जितना बड़ा नाम है, उतना ही ज्यादा पैसा। छात्र को किसी भी नौकरी के लिखित और मौखिक परीक्षा के लिए कोचिंग करना आवश्यक है। तो क्या हम यह मानें कि स्कूलों-कॉलेजों में दी जाने वाली शिक्षा गुणवत्ता व सफलता की कसौटी पर खरी नहीं उतरती? फिर सरकार को शिक्षा पर इतना पैसा लगाने की जरूरत क्यों है? जब कोचिंग कक्षा से ही सफलता संभव है, तो क्यों माता-पिता बच्चों को स्कूल भेज उनका समय बर्बाद करते हैं? आखिर क्या फर्क है स्कूली शिक्षा एवं कोचिंग कक्षाओं में? दरअसल, स्कूली शिक्षा में छात्र को एक निर्धारित पाठ्यक्रम के हिसाब से पढ़ाया जाता है। मनोवैज्ञानिकों की मानें तो यह उनकी उम्र एवं चिंतन शक्ति को ध्यान में रखकर किया जाता है, जिसका कोचिंग कक्षाओं में कतई ध्यान नहीं दिया जाता। छात्रों को माता-पिता दिन की शुरुआत के साथ ही कोचिंग सेंटर पर छोड़ देते हैं। शाम को फिर से बच्चा कोचिंग पहुंच जाता है। जो समय बच्चों के खेलकूद, विश्राम, गृह कार्य करने का था, अब वह कोचिंग में ही निकल जाता है। सीधा सा अर्थ है - जब उसे कोचिंग में आसानी से गृह कार्य करवाया जाएगा तो वह अपना दिमाग क्यों खर्च करेगा? अगर सही शिक्षा का ज्ञान यहीं से मिल सकता है तो क्यों नहीं स्कूलों को कोचिंग सेंटर में ही तब्दील कर दिया जाए? आज सभी जागरूक नागरिकों को अपने बच्चों को ऐसे शिक्षण संस्थानों से बचाना चाहिए, जो मात्र पैसे कमाने की दुकान रह गए हैं।

वर्तमान में बच्चों में नैतिक मूल्यों की गिरावट का भी यह एक मुख्य कारण है। जब एक बच्चा मोटी फीस देकर शिक्षा ग्रहण करता है तो वह गुरु और शिष्य के संस्कार, परंपरा और मूल्यों को पूरी तरह से नकार देता है। सवाल यह उठता है यदि कोचिंग संस्थान बेहतर शिक्षा दे रहे हैं, तो -

- *क्या सरकारी संस्थानों के अध्यापकों पर ही कोचिंग नहीं देने का दबाव बनाकर सरकार इन संस्थानों को खुलेआम प्रोत्साहन दे रही है ?*
- *क्या इन कोचिंग कक्षाएं देने वाले अध्यापकों पर कोई भी नियम लागू नहीं होते? सुनने में तो यहां तक आता है कि प्रत्येक कोचिंग संस्थान अपने नियम बनाकर सरकार की कमजोरियों को आईना दिखा रहे हैं।*
- *क्या स्कूल-कालेज एवं महाविद्यालय को मात्र एक डिग्री सर्टिफिकेट लेने का संस्थान ही कहा जाए?*

आइए, इस पर एक कदम बढ़ाकर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार कर बच्चों के कोचिंग के प्रति रुझान के विषय में सोचें व उनके सर्वांगीण विकास हेतु व इंजीनियरिंग, मेडिकल, प्रशासनिक अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु कोचिंग व्यवस्था का तिरस्कार कर एक नई शिक्षा-प्रणाली, जो हमारी परम्परागत रही है, उसे पुनर्स्थापित कर प्रतिभावान, विशिष्ट योग्यता, अंतर्दृष्टि, तार्किक शक्ति, स्मृति क्रियाकलाप, खेलकूद, शैक्षणिक, संगीत कला आदि से लबरेज युवकों को तैयार कर, नए भारत के उदय में अपना सहयोग दें। एक छोटी सी पहल से हम समाज एवं सरकार के रवैये में बदलाव की अपेक्षा कर सकते हैं। ऐसा कर स्कूली शिक्षा व्यवस्था पर जोर देते हुए छात्रों को गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान कर उनके माता-पिता को शिक्षा में होने वाले मोटे खर्च से बचा सकेंगे और एक नए समाज का उदय भी कर सकेंगे।

शिक्षा की गुणवत्ता

आधुनिक युग में भी शिक्षा की गुणवत्ता के लिए 'गुरुकुल पद्धति' को याद किया जाता है। इस पद्धति में अध्यापक शिक्षा के केन्द्र में तथा विद्यार्थी परिधि पर अवस्थित रहा है। प्रत्येक विषय के अध्यापक अपने-अपने कक्ष में स्थिर रहते थे तथा हर स्तर के विद्यार्थी निर्धारित समयानुसार आकर शिक्षा ग्रहण करते थे। इस पद्धति में अध्यापक-विद्यार्थी के बीच आत्मीय एवं भावनात्मक संबंध बनता है तथा अध्यापक पर विद्यार्थी को अपने विषय की योग्यता प्रदान करने का दायित्व रहता है। वर्तमान शिक्षा में अध्यापक विद्यार्थी को योग्य बनाने के दायित्व से रहित है। शिक्षा के यांत्रिक हो जाने से डॉक्टर, इंजीनियर जैसे कल-पुर्जों का निर्माण तो हो रहा है, लेकिन मानव का निर्माण बाधित हो गया है। शिक्षा को स्वदेशी, भावनात्मक तथा सार्थक बनाने के लिए निम्न बिंदुओं पर विशेष ध्यान देना होगा -

- *सबसे पहले कक्षाओं का निर्माण विषयवार हो।*
- *प्रवेश में अध्यापक की भूमिका निर्णायक हो तथा प्रबंध तंत्र का वर्चस्व कम हो।*
- *अध्यापकों पर विद्यार्थी को योग्य बनाने का भार हो।*
- *अध्यापकों के प्रशिक्षण एवं चयन में उनके गुण, शील, चरित्र तथा शिक्षण के प्रति उनके समर्पण भाव का आकलन हो।*
- *जल, जमीन, जंगल एवं जानवरों के महत्व का ज्ञान कराने वाले पाठयक्रम का निर्माण हो।*
- *मानवीय चरित्र निर्माण के लिए आवश्यक पाठ्यक्रम का विकास हो। साथ ही राष्ट्र, संस्कृति, भाषा-भूषा, आहार-व्यवहार के प्रति गौरव के भाव का विकास हो।*
- *प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर किताबों का बोझ कम हो और डिग्री-सर्टिफिकेट से अधिक योग्यता/गुणवत्ता के विकास को महत्व मिले।*
- *परीक्षाओं का संचालन इस प्रकार हो कि विद्यार्थी निर्भय होकर उत्साह से परीक्षा में बैठें।*
- *प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी विशिष्ट अनुभवी प्रशिक्षकों से कराई जाए।*
- *निजी कोचिंग व्यवस्था, जो व्यापार का रूप ले चुकी है, उसे धीरे-धीरे समाप्त किया जाए।*